नैतिकता की पृष्ठभूमि

प्रारंभ में बालक यह नहीं जानता कि- 'क्या उचित है' और 'क्या अनुचित है'। वह नैतिक व्यवहार माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के अनुकरण, अनुसरण, मित्रों की संगति, शिक्षा, दंड एवं पुरस्कार, निंदा एवं प्रशंसा, सलाह या मार्गदर्शन के आधार पर सीखता है। परंतु जैसे-जैसे आयु बढ़ने के साथ-साथ उसके विवेक और ज्ञान का विकास होता है, वैसे-वैसे उसमें नैतिकता एवं ***नैतिक चेतना (Moral Consciousness)*** का भी विकास होता है। यहाँ नैतिक चेतना का अर्थ है- नैतिक गुणों का बोध। उचित-अनुचित, सही-गलत आदि के संदर्भ में ज्ञान, भावना एवं क्रियात्मक पक्ष के समुच्चय को नैतिक चेतना कहते हैं।

मानव जीवन संवेगात्मक एवं बौद्धिक पक्ष का समन्वय है जिसकी अभिव्यक्ति उसके आचरण एवं व्यवहार में होती है। मनुष्य की सहज प्रवृत्तियाँ अर्थात् भावनाएँ, इच्छाएँ, इन्द्रियाँ आदि उसको एक ओर खींचती है तो दूसरी ओर बुद्धि उसे नियंत्रित, निर्देशित करती है या दूसरे रास्ते पर ले जाती है। जीवन में कई बार व्यक्तिगत हित और सामाजिक हित, तात्कालिक क्षणिक लाभ और व्यापक दीर्घकालिक लाभ, वासना एवं बुद्धि, परिस्थितियों की जटिलता आदि के कारण कर्तव्यों के अनुपालन को लेकर द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न होती है कि आखिर वह क्या करें?, क्या न करें?, कैसे करें? और क्यों करें? ऐसी ***नैतिक परिस्थिति (Moral Situation)*** में व्यक्ति की नैतिक चेतना जागृत होती है भले ही बुद्धि संशय या द्वंद्व की स्थिति में रहे। उचित-अनुचित, अच्छा-बुरा आदि नीति संबंधी प्रत्ययों की चेतना ही नैतिक चेतना है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है परंतु मनुष्य की इच्छाओं, आकांक्षाओं, उद्देश्यों एवं स्वार्थों में भेद एवं विरोध के कारण उनमें आपस में संघर्ष होता है, जिसके फलस्वरूप व्यवस्थित एवं सामंजस्यपूर्ण सामाजिक जीवन कठिन हो जाता है। वस्तुत: ऐसी ही कठिनाईयों को दूर करने के लिए नीतिशास्त्र का विकास हुआ है। नीतिशास्त्र में ऐसे मापदंडों, नियमों एवं सिद्धांतों के निर्माण एवं आदर्शों की स्थापना का प्रयास होता है जिसके द्वारा समाज में यथासंभव अधिकाधिक व्यवस्था एवं सामंजस्य की स्थापना की जा सके तथा विभिन्न मनुष्यों की इच्छाओं और स्वार्थों के कारण होने वाले संघर्ष एवं विवाद को कम या समाप्त किया जा सके। समाज में व्यावहारिक समस्याओं को समझने, उनका समुचित समाधान निकालने, गरिमापूर्ण जीवन व्यतीत करने तथा जीवन के उद्देश्यों एवं उनकी प्राप्ति के मानकों की स्थापना करने की प्रेरणा ही नीतिशास्त्र को जन्म देती है। नीतिशास्त्र द्वारा मानव का नैतिक उत्थान संभव है।

सामान्य परिस्थितियों में नैतिकता के निर्धारण के क्रम में वाह्य पक्षों यथा- सामाजिक नियम, राजकीय कानून, नीति संहिता, आचरण संहिता आदि की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। परंतु जब जीवन में सत्य-असत्य के निर्धारण में धर्म-संकट या द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न होती है तो वैसी स्थिति में 'अंतर्रात्मा की आवाज' नैतिकता के निर्धारण का एक महत्वपूर्ण आधार बन जाता है।

नीतिशास्त्र एवं मानवीय सहसंबंध

नीतिशास्त्र में सामाजिक जीवन व्यतीत करने वाले सामान्य मनुष्यों के आचरण या ऐच्छिक कर्मों का कुछ नैतिक मापदंडों, मानकों एवं आदर्शों के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है, ताकि व्यक्तिगत हित और सामाजिक हित में सामंजस्य स्थापित हो सके तथा सुखद मानवीय जीवन की स्थापना हो सके। चूंकि मानव एक सामाजिक प्राणी है अत: वह अपने विचारों, निर्णयों एवं क्रियाकलापों से दूसरों को प्रभावित करता है और स्वयं भी अन्यों से प्रभावित होता है। समाज के विभिन्न मनुष्यों के बीच होने वाले आदान-प्रदान, क्रिया-प्रतिक्रिया आदि मानवीय सहसंबंध को इंगित करते हैं, इसमें नैतिक मापदंडों, आदर्शों एवं मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनके आधार पर ही कर्मों के औचित्य-अनौचित्य, अच्छा-बुरा आदि का निर्धारण किया जाता है। इस रूप में मानवीय सहसंबंधों/ अर्न्तसंबंधों के सम्यक् निर्वहन में नीतिशास्त्र की महत्वपूर्ण भूमिका है।

संक्षेप में ***नीतिशास्त्र में सामाजिक जीवन व्यतीत करने वाले, सामान्य मनुष्यों के ऐच्छिक कर्मों (आचरण एवं चरित्र) का, कुछ सिद्धांतों, नियमों एवं मानकों के आधार पर उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ के संदर्भ में मूल्यांकन किया जाता है।***

विलियम लिली के अनुसार- नीतिशास्त्र उन मानकों की व्याख्या प्रस्तुत करता है जिसके आधार पर हम व्यक्ति के कर्मों के उचित अथवा अनुचित होने का निर्णय देते हैं।

नैतिकता का वर्तमानकालीन संदर्भ

सदियों पूर्व ग्रीक दार्शनिक सुकरात ने कहा था 'An unexamined life is not worth living' अर्थात् ***'अनपरखा जीवन जीने योग्य नहीं है।'*** इस कथन को सार्थक बनाने के उपकरण आधुनिक विज्ञान में प्राप्त हुए। लेकिन यहाँ विडम्बना यह रही कि जिस रफ्तार से विज्ञान ने अपने विस्मयकारी आविष्कारों के द्वारा भौतिक जगत अर्थात् मनुष्य के बहिर्जगत का रूपांतरण किया उसी गति से वह मानव के अंतर्जगत अर्थात् मन के सोचने के तरीकों का, सामाजिक समझ का, सामाजिक व्यवस्था को रूपांतरण करने और मानव के चरित्र एवं व्यक्तित्व एवं सामाजिक जीवन को नये ज्ञान के आधार पर पुनर्गठित करने की ओर अग्रसरित नहीं हुआ। समाज का बैलगाड़ी युग से रेल या जेट युग में प्रवेश तो हुआ परंतु मन की गाड़ी बैल अर्थात् मध्ययुगीन संस्कार ही खींच रहे हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास ने एक तरफ तो हमारे परंपरागत मूल्यों और विश्वासों पर चोट की है तो दूसरी तरफ वह मनुष्य के सामने नवीन सृजनात्मक मानवतावादी मूल्यों की स्थापना और प्रसार करने में असफल रहा है। विज्ञान ने मनुष्य को स्वतंत्र नैतिक चयन हेतु प्रेरित किया परंतु बिना नैतिक आधार और मानदंड के यदि चयन किया गया तो उसका दुष्परिणाम समाज और देश को उठाना पड़ता है।

वर्तमान में बढ़ती समस्याओं यथा भ्रष्टाचार, मूल्यविहीन भौतिक प्रवृत्ति, येन-केन-प्रकारेण भौतिक सुख प्राप्ति की लिप्सा, धार्मिक रूढ़िवादिता, कट्टरता, साम्प्रदायिकता, वैमनस्य, जातिभेद, लिंगभेद, आतंकवाद, पर्यावरणीय संकट, मूल्यों का पतन आदि के परिप्रेक्ष्य में इस बात के चिंतन की प्रासंगिकता बढ़ गयी है कि जीवन और समाज में मूल्यों का बीजारोपण कैसे किया जाये? उन्हें कैसे संरक्षित एवं प्रसारित किया जाए? और किस आधार पर संरक्षित किया जाये? इसकी विवेचना आज पूरे वैश्विक संदर्भ में उभरकर सामने आ गयी है। जब तक व्यक्ति के जीवन, समाज, राजनीति तथा शासन एवं प्रशासन में नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों का सुदृढ़ीकरण एवं विस्तारीकरण नहीं किया जायेगा तब तक उपरोक्त संकटों का सम्यक् समाधान नहीं निकल पायेगा। यही कारण है कि नीतिशास्त्र वर्तमान में पूरे वैश्विक स्तर पर विवेचन के एक मुख्य संदर्भ के रूप में उभर कर सामने आ रहा है। नैतिकता गत्यात्मक एवं रचनात्मक होती है तथा रूढ़िवादी तत्वों का निषेध करती है।

नीतिशास्त्र का अर्थ (Meaning of Ethics)

अंग्रेजी में नीतिशास्त्र का समानार्थक शब्द '**इथिक्स** *(Ethics)*' है। *'Ethics'* ग्रीक शब्द *'Ethica'* से व्युत्पन्न हुआ है- जिसका अर्थ है रीति-रिवाज, प्रचलन या आदत। इसे नीति-विज्ञान *(Science of Morality)* भी कहा जाता है।" *नीतिशास्त्र या आचारशास्त्र के लिए 'मोरल फिलोसफी' (Moral Philosophy) शब्द का भी प्रयोग होता है। 'मोरल' शब्द लैटिन भाषा के 'मोरस (Mores)' शब्द से उत्पन्न हुआ है। इसका भी अर्थ है- रीति-रिवाज, प्रचलन, आदत या अभ्यास। इस तरह नीतिशास्त्र का शाब्दिक अर्थ है- मनुष्य के रीति-रिवाजों, आदतों या अभ्यासों का विज्ञान।* यह शाब्दिक अर्थ नीतिशास्त्र के आरंभिक स्वरूप को इंगित करता है। इसी दृष्टिकोण से परंपरा के अनुकूल कार्यों को नैतिक और उसके प्रतिकूल कार्यों को अनैतिक माना जाता है।

रीति-रिवाज, प्रचलन या सामाजिक परंपराओं का विकास मनुष्य के सामाजिक जीवन के विकास के साथ-साथ हुआ है। जब से मनुष्यों ने परस्पर सहयोग से समाज का निर्माण किया और समस्याओं के समाधान हेतु प्रयास शुरू किये तभी से कुछ ऐसे नियमों की आवश्यकता पड़ी जो उसकी तथा दूसरे मनुष्यों की इच्छाओं, रूचियों, आकांक्षाओं, उद्देश्यों तथा स्वार्थों में होने वाले संघर्ष को कम या समाप्त कर सके तथा जिसका पालन करके वह दूसरों के साथ सुख, शांति एवं सामंजस्यपूर्ण तरीके से सामाजिक जीवन व्यतीत कर सके। कालांतर में धीरे-धीरे इन्हीं नियमों ने सामाजिक परंपराओं एवं रीति-रिवाजों का रूप ग्रहण कर लिया जिनका पालन समाज के

सदस्य के रूप में प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक समझा जाने लगा। वस्तुत: इन सामाजिक परंपराओं, रूढ़ियों अथवा रीति-रिवाजों से ही जिस शास्त्र या विज्ञान का विकास हुआ उसे आज हम नीतिशास्त्र या नैतिक दर्शन कहते हैं।

वर्तमान में नीतिशास्त्र केवल रीति-रिवाजों एवं परंपराओं तक सीमित नहीं है। परम्परा का निर्वहन वहीं तक होना चाहिए जहाँ तक वह मानवता तथा समानता, स्वतंत्रता एवं न्याय के सामाजिक-राजनीतिक आदर्शों के विपरीत न हो। अब नीतिशास्त्र के अंतर्गत मानवीय क्रियाकलापों के कारण उत्पन्न समस्याओं का नैतिक समाधान भी ढूंढने का प्रयास किया जा रहा है। आज नीतिशास्त्र का क्षेत्र व्यक्ति, समाज, शासन, राष्ट्र एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों एवं समाधानों तक विस्तारित हो चुका है।

Ethics (नीतिशास्त्र) एवं Morality (नैतिकता)

'इथिक्स' एवं 'मोरालिटी' दोनों परस्पर संबंधित अवधारणाएं हैं। इन्हें एक-दूसरे से पूर्णत: पृथक करके नहीं समझा जा सकता है। दोनों में मानव के आचरण, करणीय-अकरणीय, उचित-अनुचित, अच्छा-बुरा, सही-गलत आदि की चर्चा होती है। फिर भी दोनों में कुछ अंतर है।

अंग्रेजी का 'इथिक्स' (नीतिशास्त्र) शब्द ग्रीक शब्द 'इथिका' (Ethica) से निकला है जो स्वयं 'इथोस' (Ethos) से व्युत्पन्न है जिसका आशय चरित्र से है इस रूप में नीतिशास्त्र मानव के चरित्र का अध्ययन है। अंग्रेजी का 'मोरल' (Moral) शब्द लैटिन भाषा के 'मोरेस' (Mores) से व्युत्पन्न है जिसका आशय रीति-रिवाज, परम्परा आदि से है।

इथिक्स में सैद्धांतिक पक्ष की विवेचना होती है, वही व्यवहार के स्तर पर मोरालिटी (नैतिकता) की स्थिति उभरती है। इथिक्स में क्षेत्र विशेष के संदर्भ में सार्वभौम नैतिक मापदंडों, मूल्यों एवं आदर्शों का निरूपण होता है। जैसे- मीडिया इथिक्स, पर्यावरणीय नीतिशास्त्र, प्रशासकीय नीतिशास्त्र आदि। जबकि Morality में व्यक्तिगत स्तर का भाव होता है। नैतिकता के मानदंड निर्धारण में स्वयं व्यक्ति की भूमिका महत्वपूर्ण हो होती है। इस रूप में नैतिकता में व्यक्तिगत रूचि अर्थात् आंतरिक स्रोत की प्रधानता होती है। इसी कारण एक व्यक्ति विशेष के लिए कोई कर्म, विचार या विश्वास नैतिक हो सकता है, तो दूसरों के लिए अनैतिक।

इथिक्स (नीतिशास्त्र) को अध्ययन के एक विषय एवं आदर्शमूलक विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाता है, जहाँ नैतिक मापदंडों एवं आदर्शों का निरूपण होता है एवं उनके आधार पर मनुष्य के कर्मों का मूल्यांकन किया जाता है। इस क्रम में नैतिक प्रत्यय जैसे- उचित-अनुचित, कर्त्तव्य, अधिकार, दंड और पुरस्कार, नैतिकता की मान्यताएँ, नैतिक निर्णय का स्वरूप आदि का भी अध्ययन किया जाता है। नैतिकता को विषय के रूप में न मानकर व्यवहार के औचित्य-अनौचित्य, करणीय-अकरणीय आदि के रूप में देखा जाता है। पॉटर स्टीवर्ट के अनुसार- आपको क्या करने का 'अधिकार' है तथा क्या 'सही' है, के बीच का अंतर जानना ही नैतिकता है। इस रूप में नैतिकता का कार्य किसी विशेष परिस्थिति में किसी मनुष्य को क्या करना चाहिए, यह निर्देशित करना है।

नीति का शाब्दिक अर्थ है- ले जाना। यहाँ इसका आशय मानव के आचरण को कुमार्ग से सन्मार्ग अर्थात् कर्त्तव्य के पथ पर ले जाना है। इस मार्ग पर चलकर ही व्यक्तिगत हित और सामाजिक हित में सामंजस्य की स्थापना तथा सुखद् मानवीय जीवन की प्राप्ति संभव है।

व्यापक दृष्टिकोण से नीतिशास्त्र मानव आचरण के विभिन्न पक्षों का अध्ययन कर संबंधित प्रश्नों एवं समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है, जैसे-

- क्या उचित और क्या अनुचित है?
- हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए?
- किसी विशेष परिस्थिति में उचित और अनुचित का निर्धारण कैसे किया जाय?
- क्या नैतिकता के निर्धारण का कोई सार्वभौम मानदंड हो सकता है?
- क्या नैतिक नियम कभी-कभी अप्रासंगिक हो जाते हैं?
- क्या नैतिकता के परंपरागत मानदंड अप्रासंगिक हो गये हैं?

- क्या उचित और अनुचित का निर्धारण परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता रहता है?
- मनुष्य होने के नाते हमारे कर्त्तव्य क्या हैं और उनका निर्धारण किस आधार पर तथा किसके द्वारा किया जा सकता है?
- क्या हमारे समस्त कर्मों का उद्देश्य केवल अपना सुख और हित होना चाहिए अथवा हमें दूसरों के सुख तथा हित के लिए ही सब कुछ करना चाहिए? यदि अपने और दूसरों के सुख तथा हित में संतुलन बनाए रखना आवश्यक है तो इस संतुलन का आधार एवं उपाय क्या है?
- जब व्यक्ति और समाज के हितों में संघर्ष होता है तो उसे किस उपाय अथवा विधि द्वारा कम या समाप्त किया जाना चाहिए।
- क्या मानव के जीवन का कोई परम लक्ष्य अथवा अंतिम साध्य है? यदि हो तो यह परम लक्ष्य क्या है और इसे कैसे प्राप्त किया जाना चाहिए? क्या दूसरों की चिंता किए बिना मनुष्य को जीवन के इस परम लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए?

मानव जीवन के उपरोक्त आधारभूत प्रश्नों तथा ऐसे ही अन्य अनेक प्रश्नों पर नीतिशास्त्र अथवा नैतिक दर्शन व्यवस्थित रूप से विचार करता है और उनका समुचित एवं संतोषप्रद उत्तर खोजने का प्रयत्न करता है।

वस्तुतः नीतिशास्त्र वह विज्ञान है, जिसमें ***मानव-आचरण (व्यवहार या क्रियाकलाप) के आदर्शों एवं मानकों की मीमांसा*** *होती है, जिससे मनुष्य का कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य और उसके कर्मों के औचित्य-अनौचित्य का निर्णय किया जा सके। चूँकि आचरण का आधार चरित्र है, इसलिए इसे चरित्र-विज्ञान भी कहा जा सकता है।*

नीतिशास्त्र का संबंध केवल सामान्य मनुष्य के ऐच्छिक क्रिया या आचरण से है। ऐच्छिक कर्म वे हैं जिन्हें मनुष्य अपनी स्वतंत्र इच्छा या संकल्प से करता है। यदि वह चाहे तो उसकी जगह कोई दूसरा कर्म भी कर सकता है, अर्थात् इच्छानुसार विभिन्न कार्यों को करने की उसे स्वतंत्रता है। मनुष्य की सभी क्रियाएं ऐच्छिक नहीं होतीं। जैसे- छींकना, साँस लेना आदि। नीतिशास्त्र मनुष्य के अनैच्छिक व्यवहारों का मूल्यांकन नहीं करता है। पुनः छोटे बच्चे, पागलों एवं पशुओं आदि के कर्मों का भी नैतिक मूल्यांकन नहीं होता क्योंकि वहां संकल्प स्वातंत्र्य का अभाव होता है। ***ऐच्छिक कर्म ऐसे कर्म हैं जिन्हें विवेकशील कर्ता जान-बूझकर, सोच-समझकर, अपनी स्वतंत्र इच्छा से करता है।***

नीतिशास्त्र में सामान्य मनुष्य के ऐच्छिक कर्मों का मूल्यांकन होता है। इसके आधार पर ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं आचरण (चरित्र एवं आदत) का मूल्यांकन करता है और उनके ऐच्छिक कर्मों को उचित और अनुचित के रूप में डालकर उस व्यक्ति के सच्चरित्र या दुष्चरित्र होने का निर्धारण किया जाता है।

ऐच्छिक कर्म या क्रियाओं को दो भागों में बांटा जा सकता है- 1. सचेतन ऐच्छिक क्रिया 2. अभ्यासजन्य ऐच्छिक क्रिया।

जैसे- हम किसी को दान या सहायता करते हैं तो हमें इसका ज्ञान होता है। हम इच्छापूर्वक यह प्रयास संपन्न करते हैं। इसे सचेतन ऐच्छिक क्रिया कहते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी क्रिया का बारंबार अभ्यास करता है तो वे क्रियाएँ निरंतर अभ्यास से आदत के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। जैसे- बातचीत में अपशब्द कहने वाला व्यक्ति इसे अपनी आदत का अंग बना लेता है और बिना किसी चेतन प्रयास के इसे संपन्न करता है। इन्हें ऐच्छिक क्रिया इसीलिए कहते हैं क्योंकि प्रारंभ में व्यक्ति इन्हें उद्देश्यपूर्वक एवं स्वतंत्रतापूर्वक करता है, जिसकी कालांतर में आदत पड़ जाती है। यदि वह व्यक्ति चाहता तो आदत नहीं पड़ती। पुनः दृढ़ संकल्प द्वारा आज भी अपनी बुरी आदतों को दूर कर सकता है। नीतिशास्त्र इन दोनों प्रकार के ऐच्छिक कर्मों के औचित्य, अनौचित्य पर विचार करता है और उन कर्मों का मूल्यांकन कर अपना निर्णय प्रस्तुत करता है।

- नीतिशास्त्र केवल मनुष्य के आचरण पर विचार करता है। आचरण ऐच्छिक क्रियाओं से संबंधित होते हैं। आदत से विवश होकर किये गये कर्मों को भी ऐच्छिक ही माना जाता है।
- नीतिशास्त्र केवल समाज में रहने वाले मनुष्यों के आचरण पर निर्णय देता है।
- मानव आचरण के औचित्य एवं अनौचित्य, शुभता-अशुभता का निर्धारण होता है, अर्थात् कौन कर्म उचित है, कौन कर्म अनुचित है।
- ***नीतिशास्त्र का मुख्य विषय*** नैतिक मानदण्ड (Moral Standard), नैतिक सिद्धांत, आचरण के नियम या जीवन के वास्तविक आदर्श की पहचान एवं उसकी स्थापना कर यह निर्धारण करना है कि हमारा आचरण कैसा होना चाहिए।

क्या नीतिशास्त्र एक विज्ञान है?

नीतिशास्त्र एक विज्ञान है परंतु यह विधायक विज्ञान या वर्णात्मक विज्ञान *(Natural Science/Positive Science)* न होकर नियामकीय या आदर्श मूलक विज्ञान *(Normative Science)* है-

1. नीतिशास्त्र एक विज्ञान है क्योंकि इसमें क्षेत्र विशेष का सुव्यवस्थित अध्ययन होता है। इसमें मानव के ऐच्छिक कर्मों एवं जीवन की नैतिक समस्याओं का क्रमबद्ध, व्यवस्थित, निष्पक्ष एवं वस्तुनिष्ठ ढंग से अध्ययन का प्रयास किया जाता है।
2. नीतिशास्त्र एक आदर्श-मूलक या नियामक विज्ञान है। इसमें मानव के आचरण का मूल्यांकन किसी मानक, नियम या आदर्श के आधार पर किया जाता है। इसका उद्देश्य विधायक या विवरणात्मक विज्ञान *(Positive Science)* की भाँति किसी वस्तु या घटना का ज्यों-का-त्यों या तथात्मक वर्णन करना नहीं है। इस रूप में इसका संबंध 'क्या है' से न होकर 'क्या होना चाहिए' से है।

क्र. सं.	विधायक या प्राकृतिक विज्ञान (Positive or descriptive Science)	नियामक, मानकीय या आदर्श विज्ञान (Normative Science)
1.	इसमें वस्तु या घटना के कारण की व्याख्या की जाती है।	इसमें प्रयोजन अर्थात् 'किसलिए' की व्याख्या होती है।
2.	इसकी विषय-वस्तु कोई घटना या यथार्थ पदार्थ है।	इसका विषय आदर्श, मापदंड, कर्त्तव्य, मूल्य आदि है।
3.	इसमें किसी वस्तु, विषय या घटना का केवल तथ्यात्मक वर्णन होता है।	इसमें किसी वस्तु, घटना या सामाजिक जीवन व्यतीत करने वाले सामान्य मनुष्य के ऐच्छिक कर्म का मूल्यांकन होता है।
4.	इसमें वस्तु या घटना का 'ज्यों का त्यों' अर्थात् 'क्या है' का वर्णन किया जाता है।	इसमें नैतिक आचरण का वर्णन ही नहीं होता बल्कि यह भी बताया जाता है कि 'क्या करना चाहिए' और 'क्या नहीं करना चाहिए'।
5.	यहाँ अच्छा-बुरा, उचित-अनुचित कहकर उनका मूल्यांकन नहीं होता है।	यह अध्ययन एवं मूल्यांकन किसी मानक या आदर्श के दृष्टिकोण से किया जाता है।

नीतिशास्त्र की उपयोगिता या लाभ

मानव को शुभ की ओर प्रेरित करना: नीतिशास्त्र मनुष्य को उचित एवं अनुचित आचरणों का ज्ञान देकर, नैतिक पथ पर चलने की दिशाबोध कराकर, मानव शुभ की प्राप्ति की ओर प्रेरित करता है। यह सामाजिक रीति-रिवाजों, धार्मिक प्रथाओं, सामाजिक एवं राजनीतिक कार्य प्रणालियों के दोषों को उजागर कर नैतिक आदर्श के संबंध में हमारे विवेक को जागृत करता है।

व्यवहार कुशल बनाने में सक्षम: नीतिशास्त्र की शिक्षा व्यक्ति को व्यवहार कुशल बनाती है। नीतिशास्त्र परोक्ष रूप से हमारे व्यावहारिक जीवन के सभी पक्षों पर प्रभाव डालता है। धर्म, राजनीति, अर्थशास्त्र, कानून, शिक्षा, प्रशासन, व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक संबंध इत्यादि से संबंधित सभी महत्वपूर्ण समस्याओं के बारे में 'क्या होना चाहिए' (नैतिक समाधान की प्राप्ति) के निर्धारण के क्रम में इसकी महत्ता उभरकर सामने आती है। इससे व्यक्ति को अपने वातावरण के साथ समायोजन में सहायता मिलती है।

मानव जीवन के परिष्करण हेतु नीतिशास्त्र का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। नीति-विहीन मनुष्य का जीवन पशु-तुल्य है। भर्तृहरि अपने 'नीतिशतक' में यह कहते हैं कि-

येषां न विद्या, न तपो, न दानं, न ज्ञानं, न शीलं, न गुणो, न धर्मः।

ते मृत्युलोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण मृगाः चरन्ति।।

भावार्थः जिन मनुष्यों के आचरण में न तो विद्या है और न तो तप है एवं दान, ज्ञान, शील, गुण तथा नैतिक मूल्यों का अभाव है, ऐसे लोग इस भूलोक के भारस्वरूप पशुतुल्य ही हैं।

''आहार-निद्रा-भय-मैथुनं च, सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।

धर्मो हि तेषामधिको विशेषो, धर्मेण हीना: पशुभि: समाना:।।''

अर्थात् आहार, निद्रा, भय और मैथुन- ऐसी गतिविधियों में मनुष्य की स्थिति पशुओं के समान होती है। धर्म (नैतिक कर्तव्य, सदाचार आदि) ही मनुष्यों में वह विशेष तत्व होता है जो उसे पशुओं से भिन्न एवं श्रेष्ठ बनाता है। धर्म के बिना मनुष्य पशु के समान होता है। सदसद् विवेक अर्थात् उचित-अनुचित के विवेक और तदनुरूप आचरण के कारण ही मनुष्य पशुओं से श्रेष्ठ होता है। मनुष्य अपनी विवेक शक्ति के कारण अपनी पाशविक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखकर भविष्य को सँवारता है।

रूढ़िवादिता एवं अंधविश्वास का अंत करने में सहायक: नीतिशास्त्र मनुष्य के व्यापक हित को ध्यान में रखकर उसके कर्मों का मूल्यांकन करता है। उचित और अनुचित के ज्ञान से अंधविश्वास, रूढ़िवादिताएँ एवं भ्रांत धारणायें दूर होती हैं तथा वह सृजनात्मक कार्यों हेतु प्रेरित होता है।

समाज के सम्यक् संचालन हेतु: किसी भी समाज के सम्यक् संचालन के लिए कुछ नियमों एवं मानकों का होना आवश्यक है। मानव जीवन की समस्याओं को दूर कर, उन्हें सुविधा प्रदान करने हेतु निर्मित, कार्यरत संस्थाएं बिना नैतिक सिद्धांतों के प्रभावी रूप से कार्य नहीं कर सकती हैं। वैज्ञानिक अनुसंधानों और आविष्कारों ने मनुष्य के हाथों में असीम शक्ति प्रदान कर दी है। यदि वह नैतिकता की अवहेलना करता है, तो विज्ञान मानव जाति का संरक्षक न होकर संहारक बन सकता है। इस स्थिति में नीतिशास्त्र का अध्ययन काफी उपयोगी हो गया है।

नीतिशास्त्र में मनुष्य के स्वभाव, उसकी सीमाओं, परिस्थितियों, क्षमताओं एवं परिणामों आदि के आधार पर समस्याओं के स्पष्टीकरण एवं समाधान का प्रयास होता है तथा ***मानव जीवन के पथ-प्रदर्शन के लिए कुछ मूल सिद्धांतों एवं आदर्शों की स्थापना करने का प्रयास किया जाता है।*** चूंकि पर्याप्त कारण, समुचित तर्क एवं निष्पक्ष परीक्षा के अभाव में किसी व्याख्या, समाधान, सिद्धांत या आदर्श को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। इसलिए सामाजिक जीवन व्यतीत करने वाले सामान्य मानव के ऐच्छिक कर्मों का वैज्ञानिक ढंग से अनुसंधान, मूल्यांकन किया जाता है तथा स्वीकृत मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धांतों के औचित्य को स्पष्ट कर मनुष्य के कर्म, आचरण एवं चरित्र का मूल्यांकन किया जाता है।

यहाँ एक प्रश्न प्रबलता से उभरता है कि क्या किसी ऐसे मूल सिद्धांत या आदर्श की स्थापना संभव है जो सभी परिस्थितियों में सभी मनुष्यों के कर्तव्यों को निर्धारित कर सके। इसका उत्तर प्राय: नकारात्मक ही होगा क्योंकि मनुष्य का जीवन इतना जटिल और परिस्थितियाँ इतनी विविध हैं कि कोई भी सिद्धांत या आदर्श औचित्य एवं कर्तव्य के संबंध में उसका सदैव निरपेक्ष रूप से मार्गदर्शन नहीं कर सकता। प्रत्येक युग का चिंतन तात्कालिक परिवेश से प्रभावित होता है। अत: इसी कारण युग की नवीन परिस्थितियों एवं संदर्भों तथा माँगों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप ही नवीन मूल्यों का भी उभार होता है।

लेकिन नीतिशास्त्र कुछ ऐसे आधारभूत नियम, आदर्श या सिद्धांत अवश्य प्रस्तुत कर सकता है जो कि सामान्यत: मनुष्यों को यह बतला सकें कि उन्हें किन मूल कर्तव्यों का और क्यों पालन करना चाहिये। वस्तुत: ***कर्तव्य निर्धारण के संबंध में मनुष्य का समुचित मार्गदर्शन करने के लिये मूल आदर्शों या सिद्धांतों की स्थापना का प्रयास ही नीतिशास्त्र का प्रमुख कार्य है।*** इसी कारण इसे आदर्शमूलक विज्ञान की संज्ञा से सुशोभित किया गया है।

नैतिकता बहुत कुछ आहार (Nutrition) के समान है। हममें से अधिकांश लोग यद्यपि आहार संबंधी कोई शैक्षणिक पाठ्यक्रम में भागीदार नहीं रहे हैं। फिर भी हम कुछ सामान्य ज्ञान रखते हैं कि हमें क्या खाना चाहिए और क्या नहीं खाना चाहिए। फिर भी हम कभी-कभी इसमें आहार संबंधी भूल कर बैठते हैं। कई बार आहार से तात्कालिक संतुष्टि प्राप्त नहीं होती परंतु वह हमारे स्वास्थ्य पर लंबे समय तक सकारात्मक प्रभाव डालता है। हमारा नैतिक जीवन इसी के समान है। आहार जहां हमारे शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है वहीं नैतिकता हमारे नैतिक स्वास्थ्य से संबंधित है। नीतिशास्त्रीय विवेचना से हमें यह बताता है कि हमें अपने नैतिक जीवन में किन मूल्यों को धारण करना चाहिए, क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। यह हमें बेहतर जीवन के लिए प्रोत्साहित करता है। नीतिशास्त्र नैतिकता के निर्धारण के वस्तुनिष्ठ, जनोपयोगी आधारों की खोज करता है।

प्रशासनिक संदर्भ

लोक प्रशासन एवं नीतिशास्त्र दोनों परस्पर घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं नीतिशास्त्र मानवीय आचरण एवं व्यवहार से संबंधित विज्ञान है। इसके अंतर्गत उचित-अनुचित, नैतिक-अनैतिक, अच्छे-बुरे आदि विषयों पर चर्चा की जाती है। ये सभी विषय नीतिशास्त्र के साथ-साथ लोक प्रशासन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। लार्ड ऐक्टन के अनुसार- "समस्या यह नहीं है कि सरकारें क्या करती है वरन् यह है कि क्या करना चाहिए।" प्रशासन की सफलता प्रशासकों के सदाचरण और नैतिक नियमों के पालन पर ही निर्भर करती है। नैतिकता से किया गया प्रत्येक प्रशासनिक कार्य ही लोक प्रशासन है। प्रशासन का उद्देश्य जन कल्याण है तथा लोक प्रशासन उन उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन है। ऑडवे टीड के अनुसार- *"प्रशासन एक नैतिक कार्य है और प्रशासक एक नैतिक अभिकर्ता है।"*

किसी भी संगठन की कार्यकुशलता एवं प्रभावशीलता उसके कर्मचारियों की सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, निष्पक्षता तथा नैतिक नियमों एवं सिद्धांतों के पालन पर निर्भर करती है। संगठन के कार्मिकों द्वारा मूल्यपूर्ण आचरण, नैतिक नियमों और सिद्धांतों का समुचित पालन एवं तद्नुसार दायित्वों का निर्वहन करने पर ही संगठनात्मक लक्ष्यों को कुशलतापूर्वक एवं प्रभावी रूप से प्राप्त किया जा सकता है। मूल्यों एवं नियमों के पालन के अभाव में संगठन में व्यवस्था के नाम पर अव्यवस्था, नैतिकता के स्थान पर अनैतिकता, सत्यनिष्ठा के स्थान पर भ्रष्टाचार तथा सार्वजनिक हित के स्थान पर व्यक्तिगत हित की सिद्धि को बढ़ावा मिलता है।

प्रशासनिक नैतिकता से अभिप्राय प्रशासन में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा नीतिगत या नैतिक आचरण से है। आशय है कि प्रशासन में कार्यरत प्रत्येक पदाधिकारी तथा कर्मचारी पदेन शक्तियों एवं स्थितियों का जनहित में उपयोग करे, उसे व्यक्तिगत हितसिद्धि का साधन न बनाए, उसका दुरूपयोग न करे। प्रशासनिक अधिकारियों तथा कर्मचारियों का दायित्व है कि वे अपने कर्तव्यों का पालन ईमानदारी और सत्यनिष्ठा पूर्वक करेंगे तथा पद पर रहते हुए वे ऐसा कोई भी कार्य नहीं करेंगे जो प्रशासकीय नैतिकता के विरूद्ध हो। लोक सेवकों का सामाजिक जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। अत: लोक सेवकों से उच्च नैतिक आचरण की अपेक्षा की जाती है, ताकि उनके प्रभाव से लोगों में नैतिक मूल्यों के प्रति सम्मान बढ़े और वो भी आगे बढ़कर जनहितकारी कार्यों में प्रशासन को सहयोग दे सकें।

एक प्रशासनिक अधिकारी को अपने कर्तव्यों के निर्वहन के क्रम में अनेकों बार विषम परिस्थितियों एवं दुविधापूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़ता है तथा कई बार स्पष्ट नियम और कानून के अभाव में उसे स्वविवेक के आधार पर निर्णय लेकर कार्य करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में प्रशासनिक अधिकारी की सत्यनिष्ठता, ईमानदारी, सांवेगिक बुद्धि एवं अभिवृत्ति (Attitude) आदि की परख होती है। चूंकि एक प्रशासक द्वारा लिया गया निर्णय 'मानव कार्यवाही' की श्रेणी में आता है, अत: उसे अपने निर्णयों एवं कार्यों के अच्छे या बुरे परिणामों के लिए जवाबदेह होना पड़ता है। यद्यपि प्रशासनिक अधिकारी व्यक्तिगत स्तर पर निर्णय लेता है परंतु उसका प्रभाव केवल उस अधिकारी विशेष पर न होकर पूरे समाज या समुदाय पर पड़ता है। ऐसी स्थिति में निर्णय और कार्य करते समय उसे नैतिकता संबंधी विभिन्न पक्षों से परिचित होना आवश्यक है।

एक प्रशासनिक अधिकारी के ऊपर सार्वजनिक कल्याण के लिए बनाई गई नीतियों को क्रियान्वित करने, कानून और व्यवस्था की स्थापना करने, लोगों के जान-माल की रक्षा करने और उन्हें न्याय दिलाने, देश की रक्षा एवं विकास हेतु आवश्यक धन जुटाने हेतु कर-संग्रह करने, गुणवत्तापूर्ण सेवा सुनिश्चित करने, लोक निधि का सदुपयोग करने तथा शासन व्यवस्था में नैतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण करने आदि का दायित्व रहता है। ऐसी स्थिति में प्रशासनिक अधिकारी का विधि अनुसार कर्मों का संपादन करना, आपदा आदि के समय व्यापक मानवीय हित को ध्यान में रखकर निर्णय लेना, कर्तव्य के प्रति जागरूकता तथा उत्तरदायित्व-बोध का होना आवश्यक है। ऐसा तभी संभव है जब वह नैतिक एवं मानवीय मूल्यों से युक्त हो। एक प्रशासनिक अधिकारी की नैतिकता, उसकी निजी नैतिकता से अधिक व्यापक प्रभाव एवं महत्व रखती है क्योंकि उसके कार्यों का प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है।